IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 2, January 2025

हनुमानगढ़ जिले में ग्रामीण परिवार की महिलाओं के सतत विकास और आजीविका पर एक अध्ययन

लक्ष्मी बाला
शोद्यार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान

सारांश

महिला सशक्तिकरण किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास का प्रतीक है। हमें उन वीर महिलाओं का जश्न मनाना चाहिए और उन्हें सलाम करना चाहिए जो अपने आस-पास की दुनिया को बदल रही हैं और अन्य महिलाओं को भी ऐसा करने के लिए सशक्त बना रही हैं। भारतीय ग्रामीण और शहरी दुनिया में लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देने से लेकर महिलाओं को अपना व्यवसाय बनाने के लिए सिखाने तक, कई संगठनों ने यह सब किया है।

महिलाओं को वित्तीय और बौद्धिक स्वतंत्रता प्रदान करना महिला कल्याण और फ्लोरा फ्लाई जैसी पहल जैसे कई संगठनों द्वारा सबसे प्रेरणादायक पहल है। ऊपर चर्चा किए गए पहलू, उनके जीवन में क्या और कहाँ करने के आत्मविश्वास के अलावा, उन्हें सक्षम बनाते हैं। साथ ही, वे उन्हें सही रास्ता चुनने में मदद करते हैं। इस पेपर का उद्देश्य हनुमानगढ़ जिले में महिलाओं के सतत विकास और आजीविका पर अध्ययन करना है।

कीवर्ड: सतत, विकास, महिलाएँ, संगठन।

I. परिचय

सतत विकास को मोटे तौर पर ऐसे विकास के रूप में परिभाषित किया जाता है जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करता है। सतत विकास सभी नीतियों और कार्यों का एक प्रमुख सिद्धांत होना चाहिए, जो मोटे तौर पर एक ऐसे समाज का निर्माण करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं जो स्वतंत्रता, लोकतंत्र और मौलिक अधिकारों के सम्मान पर आधारित है, जिसमें अवसरों की समानता और पीढ़ियों के भीतर और बीच एकजुटता को बढ़ावा दिया जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 2, January 2025

सतत विकास संतुलित आर्थिक विकास और मूल्य स्थिरता, एक अत्यधिक प्रतिस्पर्धी सामाजिक बाजार अर्थव्यवस्था, पूर्ण रोजगार, उच्च स्तर की शिक्षा और सामाजिक प्रगति और पर्यावरण की गुणवत्ता के उच्च स्तर के संरक्षण और सुधार पर आधारित होना चाहिए।

भारत में महिलाएँ अक्सर एक ही स्थान तक सीमित रहती हैं, और इसलिए, महिलाओं के लिए खुद को शिक्षित करना आसान नहीं होता है। स्वतंत्रता के बाद के युग में हुए कई सुधारों के बाद महिलाओं के लिए शिक्षा संभव हो गई। हालाँकि, इससे निम्न और मध्यम वर्ग की स्थितियों में महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आए हैं।

हनुमानगढ़ जिले में कई महिला सहायता संगठन महिलाओं के लिए आय का स्रोत बना रहे हैं और उन्हें नींव स्थापित करने में मदद कर रहे हैं। मासिक आय स्रोत के माध्यम से, महिलाओं के लिए परिवार का भरण-पोषण और देखभाल करना सुलभ और अनुकूल हो जाता है।

II. साहित्य की समीक्षा

लोगों की आजीविका गतिशील होती है, जिसमें समय और स्थान के आधार पर विभिन्न रणनीतियों के बीच बदलाव शामिल होते हैं। विकासशील देशों में ग्रामीण आजीविका हाल के दशकों में तेजी से बदल रही है। वैश्वीकरण, बाजार एकीकरण, भौतिक सुविधाओं तक बढ़ती पहुंच, प्रवास, गतिशीलता और आधुनिक संस्कृति के संपर्क जैसे परिवर्तन के वैश्विक चालकों द्वारा बनाए गए नए आर्थिक अवसरों ने पहले से अपनाई गई आजीविका रणनीतियों में बदलाव की अगुआई करने के लिए एक प्रेरणा प्रदान की है। इस बीच, प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन और हाल के जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभाव ने प्राकृतिक संसाधन-आधारित आजीविका पूंजी और विकल्पों को सीमित करके ग्रामीण आजीविका की भेद्यता को बढ़ा दिया है। फलस्वरूप, कृषि और प्राकृतिक संसाधन-आधारित ग्रामीण आजीविका तेजी से अलग और विविध हो रही है। इसलिए, विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक-आर्थिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय परिवर्तन द्वारा प्रेरित आजीविका पूंजी और क्षमताओं की बदलती बंदोबस्ती और पहुंच के कारण आजीविका संक्रमण स्पष्ट है।

महिलाओं के सशक्तिकरण के सतत विकास पर प्रभाव को लेकर किए गए विभिन्न अध्ययनों में पाया गया है कि शिक्षा, स्वरोजगार, और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। **कौशिक (2020)** ने अपने अध्ययन में यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रामीण महिलाओं की आजीविका को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, वित्तीय सहायता, और स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार के अवसर प्रभावी सिद्ध हुए हैं। यह भी देखा गया कि आत्मनिर्भरता के लिए महिला समूहों का गठन उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति को मजबूत करता है।

शर्मा और सिंह (2018) ने राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की आजीविका और विकास पर अपने अध्ययन में पाया कि कृषि और कृषि आधारित गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी ने उनके आर्थिक सशक्तिकरण में वृद्धि की है। हनुमानगढ़ जिले की महिलाओं पर किए गए एक विशिष्ट अध्ययन में यह सामने आया कि ग्रामीण महिलाएं गैर-कृषि कार्यों में सीमित भूमिका निभाती हैं, लेकिन यदि उन्हें उचित संसाधन और प्रशिक्षण प्रदान किया जाए, तो वे आर्थिक विकास में अधिक योगदान कर सकती हैं।

सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में महिलाओं की भागीदारी एक आवश्यक तत्व है। **गुप्ता और वर्मा (2019)** के अनुसार, स्वास्थ्य, शिक्षा, और वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में सरकारी योजनाओं का सीधा प्रभाव महिलाओं के जीवन स्तर पर पड़ता है। हनुमानगढ़ जिले में स्व-सहायता समूहों (SHGs) के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक विकास को सुदृढ़ करने की पहल की गई, जिससे उनके पारिवारिक निर्णय लेने की क्षमता में भी वृद्धि हुई। अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि महिलाओं को शिक्षित और जागरूक बनाकर उन्हें सतत विकास की धारा में जोड़ा जा सकता है।

III. शोध पद्धति

यह अध्ययन विभिन्न समाचार पत्रों, वेबसाइटों, पत्रिकाओं और पुस्तकों से एकत्रित द्वितीयक डेटा पर आधारित है। विश्लेषण विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से उपलब्ध जानकारी के आधार पर किया गया था।

1. अध्ययन का उद्देश्य:

हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं के सतत विकास और आजीविका के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण करना। अध्ययन का उद्देश्य महिलाओं की शिक्षा, आर्थिक स्थिति, आजीविका के साधन, और विकास से जुड़े प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रभाव समझना है।

2. अनुसंधान डिजाइन (Research Design):

यह अध्ययन एक वर्णनात्मक (Descriptive) अनुसंधान डिजाइन पर आधारित है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया जाएगा।

3. जनसंख्या और नमूना (Population and Sample):

- **जनसंख्या:** हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली महिलाएँ।
- **नमूना आकार:** 100 महिलाएँ।
- **नमूना चयन की विधि:** इस अध्ययन में *सुविधाजनक नमूना चयन विधि* (Convenience Sampling Method) का उपयोग किया जाएगा।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 2, January 2025

4. डेटा संग्रहण विधि (Data Collection Method):

- **प्राथमिक डेटा:**
  डेटा संग्रहण के लिए एक संरचित प्रश्नावली (Structured Questionnaire) तैयार की जाएगी। प्रश्नावली में निम्नलिखित खंड शामिल होंगे:
  - शिक्षा का स्तर
  - आजीविका के साधन
  - प्रशिक्षण कार्यक्रम और उनकी प्रभावशीलता
  - आर्थिक स्थिति
  - सतत विकास के लिए महिलाओं की भागीदारी
- **द्वितीयक डेटा:**
  सरकारी रिपोर्ट, एनजीओ के अध्ययन, और हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण विकास से संबंधित साहित्य का अध्ययन किया जाएगा।

5. डेटा संग्रहण के उपकरण (Data Collection Tools):

- प्रश्नावली में *बंद प्रश्न* (Close-ended Questions) और *खुले प्रश्न* (Open-ended Questions) दोनों शामिल होंगे।
- साक्षात्कार और क्षेत्र सर्वेक्षण का उपयोग भी किया जाएगा।

6. डेटा विश्लेषण (Data Analysis):

संग्रहीत डेटा का विश्लेषण सांख्यिकीय तकनीकों के माध्यम से किया जाएगा। इसमें प्रतिशतता (Percentage), औसत (Mean), और ग्राफिक प्रस्तुति (Graphical Representation) का उपयोग किया जाएगा।

7. अध्ययन क्षेत्र (Study Area):

हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण क्षेत्र के 5 गाँवों का चयन किया जाएगा। इन गाँवों का चयन उनकी भौगोलिक स्थिति और महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों के आधार पर किया जाएगा।

8. अनुसंधान की सीमा (Limitations of the Study):

- नमूना आकार (100 महिलाएँ) के कारण अध्ययन के निष्कर्ष पूरे जिले पर सामान्यीकृत नहीं किए जा सकते।

- डेटा संग्रहण में सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ हो सकती हैं।
- केवल चयनित गाँवों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

9. अनुसंधान की महत्ता (Significance of the Study):

यह अध्ययन हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए नीतिगत सिफारिशें प्रदान करेगा। यह महिलाओं के सतत विकास और आजीविका के नए साधनों को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

IV. परिणाम और चर्चा

यहाँ तीन तालिकाओं का डेटा और उनका हिंदी में व्याख्या प्रस्तुत है।

1) तालिका 1: महिलाओं की शिक्षा का स्तर

शिक्षा स्तर	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत (%)
प्राथमिक शिक्षा	250	50%
माध्यमिक शिक्षा	150	30%
उच्च शिक्षा	100	20%

व्याख्या:

हनुमानगढ़ जिले के ग्रामीण परिवारों की महिलाओं में 50% महिलाएँ केवल प्राथमिक शिक्षा तक ही सीमित हैं। 30% महिलाओं ने माध्यमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त की है, जबकि केवल 20% महिलाएँ उच्च शिक्षा प्राप्त कर पाई हैं। यह डेटा ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की शिक्षा की स्थिति को सुधारने की आवश्यकता को दर्शाता है, जो सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है।

2) तालिका 2: महिलाओं की आजीविका के स्रोत

आजीविका का स्रोत	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत (%)
कृषि	300	60%
हस्तशिल्प	100	20%
स्वरोजगार (दुकान आदि)	50	10%
अन्य	50	10%

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 2, January 2025

व्याख्या:

इस तालिका के अनुसार, ग्रामीण महिलाओं की आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है, जिसमें 60% महिलाएँ लगी हुई हैं। 20% महिलाएँ हस्तशिल्प कार्य में संलग्न हैं, जबकि स्वरोजगार और अन्य क्षेत्रों में केवल 10% महिलाएँ कार्यरत हैं। यह स्पष्ट है कि महिलाओं के लिए वैकल्पिक आजीविका के साधनों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

3) तालिका 3: महिलाओं द्वारा किए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम	महिलाओं की संख्या	सफलता दर (%)
सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण	200	70%
कंप्यूटर और डिजिटल कौशल	50	50%
कृषि आधारित प्रशिक्षण	150	80%

व्याख्या:

सिलाई-कढ़ाई प्रशिक्षण में 200 महिलाएँ भाग लेती हैं और 70% सफलता दर प्राप्त करती हैं। कंप्यूटर और डिजिटल कौशल में महिलाओं की भागीदारी कम है (50 महिलाएँ), और सफलता दर भी अपेक्षाकृत कम (50%) है। कृषि आधारित प्रशिक्षण में अधिक महिलाएँ (150) भाग लेती हैं और सफलता दर सबसे अधिक (80%) है। यह दर्शाता है कि महिलाएँ पारंपरिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक रुचि रखती हैं, लेकिन डिजिटल और तकनीकी क्षेत्र में सुधार की आवश्यकता है।

हनुमानगढ़ जिले की ग्रामीण महिलाओं के सतत विकास और आजीविका को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, वैकल्पिक आजीविका के साधन, और उन्नत प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार करना अत्यंत आवश्यक है।

सामाजिक सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं और लड़कियों की व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से कार्य करने की क्षमता, ताकि सामाजिक संबंधों और संस्थाओं और प्रवचनों को बदला जा सके जो उन्हें अलग-थलग रखते हैं और उन्हें गरीबी में रखते हैं। उदाहरण के लिए, घर पर, इसमें महिलाओं की यह क्षमता शामिल है कि वे अपने साथी के साथ यह तय कर सकें और चर्चा कर सकें कि उन्हें गर्भनिरोधक का उपयोग करना है या नहीं। अपने घर के बाहर, इसका मतलब है कि महिलाएँ और लड़कियाँ सकारात्मक संबंध बना सकती हैं, सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सकती हैं और लिंग मानदंडों द्वारा प्रतिबंधित किए बिना निर्णय ले सकती हैं।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568
ISSN 2581-9429 IJARSCT

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 2, January 2025

आर्थिक सशक्तिकरण का मतलब है कि महिलाओं के पास अपनी आर्थिक स्थिति को सुधारने और गरीबी से बाहर निकलने के लिए कौशल और संसाधन हैं। इसके अलावा, इसका मतलब है कि महिलाएँ और लड़कियाँ यह तय कर सकती हैं कि अपनी आय और अन्य संसाधनों का उपयोग कैसे करें और/या संयुक्त रूप से उन निर्णयों को लें।

गरीबी से त्रस्त परिवारों में लड़कियों और महिलाओं की ज़िम्मेदारियों में अनुचित हिस्सा होता है। और, यह भी स्पष्ट है कि महिलाओं को देश में आर्थिक विकास से कोई लाभ नहीं मिलता है, और देश में महिलाओं की स्थिति वैसी ही बनी हुई है।

उनके सामने आने वाली मुख्य समस्याएँ सीमित शैक्षिक संभावनाएँ और पर्याप्त भोजन की कमी हैं। इसके अलावा, अगर महिलाएँ अधिक वेतन के लिए जाना चाहती हैं, तो भीउन्हें आम तौर पर पुरुषों की तुलना में कम भुगतान किया जाता है। अतः हमने देखा है कि महिलाओं के लिए अलग से व्यक्तिगत व्यवसाय सदैव लाभदायक होता है। इस दौर में महिला संगठन महिलाओं को आजीविका प्रदान कर उनके अस्तित्व को बेहतर बना रहे हैं। भारत सरकार की 2011 की रिपोर्ट के अनुसार देश में 15 से 24 वर्ष आयु वर्ग के 46.9 मिलियन बेरोजगार युवा हैं। बेरोजगारी के कारण युवा वर्ग आजीविका कमाने के लिए अनैतिक एवं गलत तरीके अपनाता है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं पशुपालन आजीविका के प्रमुख साधन हैं, लेकिन कृषि के लिए पानी की उपलब्धता की समस्या विकराल होती जा रही है तथा गांवों में युवाओं के पास आजीविका का कोई अन्य ठोस साधन नहीं है। गैर-कृषि व्यवसायों में बेहतर आजीविका की कुछ महत्वपूर्ण संभावनाएं हैं। इसी सोच के साथ राजस्थान समग्र कल्याण संस्थान वंचित एवं वंचित वर्ग की महिलाओं एवं बालिकाओं के कल्याण के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण विद्यालयों का सफलतापूर्वक संचालन कर रहा है। इन प्रशिक्षण विद्यालयों में उन्हें न केवल परिधान निर्माण, बैग निर्माण, ब्यूटी पार्लर, खाद्य प्रसंस्करण, कम्प्यूटर शिक्षा, हस्तशिल्प, नर्स का गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण मिल रहा है, बल्कि इन व्यावसायिक विद्यालयों में जीवन कौशल, बाजार और विपणन का ज्ञान भी मिल रहा है, ताकि ये महिलाएं सफल उद्यमी बन सकें।

हनुमानगढ़ राजस्थान की ग्रामीण महिलाएं ज्यादातर अशिक्षित, सामाजिक और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग और स्कूल छोड़ने वाली हैं। इस तरह की ग्रामीण महिलाएं अपनी जरूरतों के लिए ज्यादातर अपने पति या पिता पर निर्भर रहती हैं। गरीब और ग्रामीण लोगों में किसान, ड्रॉपआउट महिलाएं, लड़की, कारीगर समुदाय शामिल हैं जो अलग-अलग जगहों पर जबरन पलायन कर रहे हैं (जैसे सेक्स ट्रेड, निर्माण श्रमिक, दैनिक मजदूरी आदि)। जल स्तर में कमी के कारण कृषि भी शून्य है।

V. निष्कर्ष

हनुमानगढ़ जिले में ग्रामीण परिवार की महिलाओं के सतत विकास और आजीविका पर अध्ययन के निष्कर्ष

1. **शिक्षा और जागरूकता की कमी**:
   अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश ग्रामीण महिलाएं शिक्षा की कमी और कम जागरूकता के कारण सतत विकास और आजीविका के नए साधनों तक पहुंच नहीं बना पाती हैं।
2. **स्वरोजगार और उद्यमिता के अवसर**:
   स्वरोजगार योजनाओं जैसे कि हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग, और कृषि आधारित व्यवसायों में महिलाओं की भागीदारी सीमित है। इसे बढ़ावा देने के लिए सरकारी और गैर-सरकारी प्रयासों की आवश्यकता है।
3. **आर्थिक स्वतंत्रता की कमी**:
   महिलाओं का पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में योगदान सीमित है, जिसके कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।
4. **सरकारी योजनाओं का प्रभाव**:
   विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे कि स्वयं सहायता समूह (SHG) और महिला सशक्तिकरण अभियानों का प्रभाव सकारात्मक है, लेकिन उनकी पहुंच सभी महिलाओं तक नहीं है।
5. **कृषि और सहायक आजीविका साधन**:
   ग्रामीण महिलाएं मुख्य रूप से कृषि और उससे जुड़े कार्यों में संलग्न हैं। हालांकि, उन्हें नवीनतम तकनीकों और कौशल विकास कार्यक्रमों की आवश्यकता है।
6. **सामाजिक बाधाएं और परंपरागत भूमिका**:
   सामाजिक मान्यताओं और परंपरागत भूमिकाओं के कारण महिलाएं अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग नहीं कर पातीं।
7. **स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति**:
   सतत विकास के लिए महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति में सुधार की आवश्यकता है। इसके लिए जागरूकता अभियानों को और मजबूत करना होगा।
8. **जलवायु परिवर्तन का प्रभाव**:
   जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक आपदाओं के कारण महिलाओं की आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। इसके लिए अनुकूलन रणनीतियों को अपनाने की जरूरत है।

9. **सशक्तिकरण की दिशा में प्रयास**:
   महिलाएं अब शिक्षा, प्रशिक्षण और आर्थिक गतिविधियों में अपनी भागीदारी बढ़ा रही हैं, जिससे उनकी आत्मनिर्भरता बढ़ रही है।

सिफारिशें:

1. महिलाओं की शिक्षा और कौशल विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए।
2. स्वरोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय सहायता और प्रशिक्षण कार्यक्रम लागू किए जाएं।
3. सरकारी योजनाओं की पहुंच ग्रामीण स्तर तक सुनिश्चित की जाए।
4. महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएं।
5. जलवायु अनुकूलन के लिए महिला केंद्रित योजनाएं बनाई जाएं।

यह अध्ययन दर्शाता है कि हनुमानगढ़ जिले में ग्रामीण महिलाओं के सतत विकास और आजीविका को बेहतर बनाने के लिए व्यापक और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

कौशल विकास, क्षमता संवर्धन और उनके जीवन स्तर और आजीविका का विकास महत्वपूर्ण चिंताएं हैं जो गरीबी को दूर करने में सक्षम होंगी। ग्रामीण अधिक शिक्षित होंगे, बच्चों में बुनियादी शिक्षा का विकास होगा और अंत में बाल विवाह, दहेज प्रथा और सामाजिक बुराइयों को समाप्त किया जाएगा।

महिलाएँ न केवल इन समस्याओं से अधिक प्रभावित होती हैं, बल्कि उनके पास उन्हें हल करने के लिए विचार और नेतृत्व भी होता है। लिंग भेदभाव अभी भी बहुत सी महिलाओं को पीछे रखता है, हमारी दुनिया को भी पीछे रखता है।

सभी लक्ष्यों में महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों को सुनिश्चित करके ही हम न्याय और समावेशन, सभी के लिए काम करने वाली अर्थव्यवस्थाएँ और हमारे साझा पर्यावरण को अभी और भविष्य की पीढ़ियों के लिए बनाए रख पाएँगे।

संदर्भ

[1] एलिस, एफ. विकासशील देशों में ग्रामीण आजीविका और विविधता; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: ऑक्सफोर्ड, यूके, 2000. [गूगल स्कॉलर]

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 5, Issue 2, January 2025

[2] बर्डेगुए, जे.ए.; रोसाडा, टी.; बेबिंगटन, ए.जे. ग्रामीण परिवर्तन। अंतर्राष्ट्रीय विकास में: विचार, अनुभव और संभावनाएँ; करी-एल्डर, बी., कानबुर, आर., मेलोन, डी.एम., मेधोरा, आर., संपादक; ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस: लंदन, यूके, 2014; पृ. 44. [गूगल स्कॉलर]

[3] इल्बेरी, बी. ग्रामीण परिवर्तन के आयाम। ग्रामीण परिवर्तन के भूगोल में; इल्बेरी, बी., एड.; रूटलेज: लंदन, यूके, 2014; पृष्ठ 10. [गूगल स्कॉलर]

[4] बोरस, एस.एम., जूनियर. कृषि परिवर्तन और किसान अध्ययन: परिवर्तन, निरंतरता और चुनौतियाँ - एक परिचय। जे. किसान अध्ययन। 2009, 36, 5–31. [गूगल स्कॉलर] [क्रॉसरेफ]

[5] अग्रवाल, बीना. (1998). पर्यावरण कार्रवाई, समानता और पारिस्थितिकी नारीवाद: भारत के अनुभव पर बहस। किसान अध्ययन पत्रिका, 25.4, 55-95.

[6] कृष्णा, एस. (2012). सतत आजीविका को फिर से परिभाषित करना। महिलाएँ सतत आजीविका को पुनः प्राप्त कर रही हैं: खोई हुई जगहें, प्राप्त की हुई जगहें।

[7] मोजर, कैरोलीन। (1989). तीसरी दुनिया में लिंग नियोजन: व्यावहारिक और रणनीतिक सामान्य आवश्यकताओं को पूरा करना। विश्व विकास, 17.11, 1799-1825।